श्रीमती माधुरी राजीव क्षीरसागर की पांच कविताएँ

१. मेरा अभिमान है मां

भोर की पहली किरण है मां...

निशा की शीतल चांदनी है मां....

शिशु की किलकारी है मां...

बेटी की मुस्कान है मां...

शिक्षा का पहला पाठ है मां....

हर प्रश्न का उत्तर है मां....

फूलों की कोमलता है मां...

पाहन की कठोरता है मां....

वीणा के स्वर है मां....

पायल की झंकार है मां...

मंदिर में गूंजता नाद है मां...

सागर की गहराई है मां....

आसमान की ऊंचाई है मां...

क्षमा की मिसाल है मां...

अवसाद में आशा है मां...

सत्य की निष्ठा है मां...

जीवन का सार है मां....

सादगी में सौंदर्य है मां...

प्रीति का संगम है मां...

मेरा अभिमान है मां।

२.परियों की दुनिया

बचपन में मां ने कही थी कहानी परियों की
सुनहरी चमकीली दुनिया थी जिनकी।

रंग– बिरंगे फूल उन पर मंडराती तितलियों सी
अद्भुत दुनिया में परियां भी थी सुंदर कोमल सी।

ना थी उनको पढ़ाई रोज की
ना थी कोई क्लास ऑनलाइन की।

लगता था काश मैं भी होती परी इन जैसी
पर देखा जब एक नन्ही परी को मैंने....

थी थोड़ी नाराज ....
कर रही थी वह भी ज़िद मां से अपने।
करनी है पृथ्वी लोक की सैर सुहानी ....
जाना हो स्कूल,
सहेली के संग खेल–कूद, या हो बातें नई पुरानी।

छोड़ परियों की बातें....
जान यह मैं मुस्कराई मन में...
खुशियां तो बिखरी ज्यादा मेरे जीवन में।

३.नारी 'तू'

शक्ति का रूप तू, घर की रौनक भी तू

अनंत काल की माता तू, बचपन की ममता भी तू

युवाओं का प्रेम तू, अधेड़ उम्र का आधार भी तो

युगों से शब्दों में पाया गौरव भी तू।

वीरांगना है तू, सबला भी तू

दुर्गा भी तू ,चंडी भी तू

मुक्त रागिनी भी तू।

फिर क्यों समाज में अपमानित होती तू...?

फिर क्यों दहेज के नाम बली जाती तो....?

फिर क्यों अवहेलना पाती तू.....?

फिर क्यों बुढ़ापे में ठुकराई जाती तू...?

फिर क्यों जन्म से पहले ही मार दी जाती तू...?

अबला भी कहीं जाती तू

फिर कैसे कहलाती आधुनिक नारी तू...?

फिर कैसे कहलाती स्वतंत्र नारी तू...?

तोड़ती पशों को ....

चलती निखारों पर दृढ़ विश्वास से पूर्ण

तो फिर क्यों यह हिचकिचाहट अपनों के कारण करती तू....

बस कुछ कदम और सही चलना है सोच यही फिर उठती तू.....

हरदम सब की उम्मीद बनती तू....

नारी, हर रुप में ढलती –निखरती तू।।

४. मैं हूं एक शिक्षक

मैं हूं एक शिक्षक

नैतिकता का रक्षक

प्रथम वंदनीय भी कहते हैं

अवहेलना भी उसी की करते हैं।

शिक्षा से सम्मान जगा मनुष्य में

उसी की विडंबना भी होती जग में

परिवर्तन अगर संसार का नियम है

तो क्या शिक्षा नीति का कोई मूल्य नहीं है?

मनुष्य बना चकाचौंध का मारा

मानवता को क्या फैशन ने हारा ?

गूगल के जमाने में किताब का मूल्य हुआ कम

फिर भी बिना शिक्षक के पढ़ाई में ना रहा दम।

क्या मैनेजमेंट क्या पेरेंट्स स्टूडेंट से भी परेशानी

झेलता शिक्षक.....

पर निष्ठा अपने पेशे से रखता वह है शिक्षक।

ना तनख्वाह समय पर मिलती,

ना मिलता सही वेतन आयोग.... देख यह सब जीवन में निराशा भी होती मन में।

फिर उठ खड़ा दृढ़ निश्चय से देख चेहरा छात्रों का...

फिर मन में उमंग भर कर्तव्य राह पर चलता

देखता जब यह– है अपने हाथ में भविष्य अपने देश का..

और यह है कहता ––

मैं हूं एक शिक्षक , नैतिकता का रक्षक,

मैं हूं एक शिक्षक ...

५. शिकस्त

सरहदों पर खड़े हो तुम शिकस्त देते हुए दुश्मनों को,

तेरी तमन्ना यही थी खुशहाल रखे तू देश के अपनों को।

दोस्तों से होती थी बातें सुख–दुख की,

ना खबर रखते परिवार की खुशहाली की।

ठंड ने कभी सिकुड़ दिया न तुम्हें

ना गर्मी ने किया बेजार तुम्हें।

लक्ष्य केवल देश के सुरक्षा का था तुम्हारा

और हम ढूंढ रहे थे कंफर्ट झोन हमारा।

न जाने कितनी रातें और कितने दिन थे बेचैन तुम्हारे ,

हम आराम फरमाएं समाचार सुनते रहे तुम्हारे।

न जाने कितने तरसे होगे तुम अपने लोगों की एक मुस्कुराहट के लिए

लेकिन हमने तो छिनी मुस्कुराहट अपनों की

केवल अपने स्टेटस के लिए।

समझकर अपना कर्तव्य सदा बढाया देश के सम्मान को

चढ़ाकर बली अपनी शिकस्त देते रहे दुश्मनों को।